

Gudi Padwa Puja

Date : 18th March 1999
Place : Noida
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 03
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आज का दिन गुडी पड़वा का है और ये महाराष्ट्र में मनाया जाता है ज्यादा। कहते हैं कि ये बड़ा शुभ दिन है, इस दिन जो भी कार्य करो वो बहुत सफल हो जाता है। वो जो भी हो, सांसारिक दृष्टि से बात है और दूसरा ये कि शालीवाहन में जो एक बब्रु वाहन करके थे, उन्होंने विक्रमादित्य को हराया और उसके बाद उन्होंने ये नया पंचांग शुरू किया जिसे शालीवाहन कहते हैं। उसके वर्ष का आज का दिन प्रथम दिन है। तो इसका महात्म्य ज्यादा महाराष्ट्र में है कि उन्होंने ये शालीवाहन का ये द्योतक दिखाने के लिए एक कुम्भ को लेते हैं और उसके अन्दर एक शाल जो कि शालीवाहन थे, तो कुम्भ कुण्डलिनी का द्योतक है। तो एक शाल टाँग देते हैं ऊपर से एक कुम्भ रख देते हैं। उसका मतलब ये है कि कुम्भ जो है आध्यात्म का भी द्योतक है, कि आध्यात्म अपने कुंभ में है। और शालीवाहन इसलिए के वो लोग पहले अपने को सात वाहन कहते थे। उनका कुण्डलिनी पर बड़ा विश्वास था, बाद में उन्होंने देवी को शाल देना शुरू कर दिया। बड़े देवी के भक्त थे। तो उन्होंने अपना नाम शालीवाहन कर लिया। इस तरह से वो नाम बदल गया और उन्होंने शालीवाहन अब जो थे वो मेवाड़ के वंशज थे। मेवाड़ के राजा होते थे। एक सिसोदिया वंश है, उस सिसोदिया वंश के एक बेटे थे, पर किसी कारण से उनका कुछ अनबन हो गया उनके चाचा के साथ, इसलिए वो भाग करके महाराष्ट्र

में चले गए। उसके बाद वो मद्रास भी चले गए। इस तरह से ये चीज है कि इनका इतिहास ऐसा है। शालीवाहन का और उसी वंश के हम भी हैं। बहुत हजारों वर्ष पहले थे तो वो गए थे महाराष्ट्र में और फिर वहाँ से उसी शालीवाहन के हम लोग वंशज हैं। इसलिए हम लोगों का नाम साल्विया-साल्वे-ऐसा कर दिया गया। तो जो साल्व थे जिन्होंने युद्ध किया था, भीष्म के साथ, आपने सुना होगा साल्व, भीष्म के साथ साल्व, उन्होंने मदद की थी पांडवों की बाद में। भीष्म ने चारों तरफ उनके शर पंजर डाले और उस शरपंजर की वजह से वे निकल नहीं पाए तो उन्होंने शाप दिया तुम्हारे भी ऐसे ही शरपंजर पड़ेंगे। वो आखिर में भीष्म के साथ हो गया। तो इस तरह से वो भी इसी वंश के हैं लेकिन हजारों वर्ष पहले के हैं। उसका (Revival) हुआ वो बहुत बाद में। एक वहाँ पर मुनि थे उनको सपने में दर्शन हुए शिवजी के और उन्होंने बताया कि बप्पारावल जो है उसको तुम यहाँ का राजा बना दो। तो फिर से Revival उसी शालीवाहन वंश का हुआ। पर पता नहीं उन्होंने कैसे साल्व से शालीवाहन बना दिया? लेकिन उन्हीं के वंश में पद्मिनी हो गई और मेरठ के लोगों से हमारे लोग पता करने गए तो वे कहते हैं ऐसे तो बिल्कुल लोग थे, अपने प्रण के पूरे और ईमानदार और देवीभक्त और माने वो कहते हैं ऐसे लोग ही नहीं थे। तो एक अजीब अजीबोगरीब लोग थे। उनका सब नष्ट भ्रष्ट हो

गया क्योंकि उन्होंने Compromise नहीं किया। जयपुर वालों ने मुसलमानों से बाद में अंग्रेजों से Compromise कर लिया तो वहाँ बहुत समृद्धि थी। तो समृद्धि से किसी की Judgement नहीं होनी चाहिए Character से होनी चाहिए। तो ये आज का दिन जो है उन्हीं शालीवाहन लोगों ने बनाया, उसमें से जो बन्नुवाहन थे उन्हें क्राइस्ट से थोड़े पहले बनाया गया है विक्रमादित्य के

जमाने में। सो अभी भी इसको महाराष्ट्र में लोग बहुत मानते हैं और इधर विक्रमी संवत है, महाराष्ट्र में शालीवाहन संवत है। हम लोग भी, क्योंकि मैं महाराष्ट्र की हूँ, शायद इसलिए हम लोग भी शालीवाहन से ही चलते हैं। उसके हिसाब से आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है और जो कुछ आज आप इच्छा करेंगे वो पूर्ण हो जाएगा।

सबको अनन्त आशीर्वाद।

